Part II Hons, P III (1) — गांधार कला — School of Gandhar Art. — Ancient History Group-C IInd Half (1)

(G) Write an essay on

Ans. गान्धारकला बुद्ध कला का एक महत्वपूर्ण अंग है। गान्धार कला का पूर्ण विकास कुषाणयुग में हुआ। भारतीय कला के इतिहास में इसका अपना विशेष महत्व है। गान्धार प्रदेश में इस कला के बहुत से नमूने प्राप्त हुए हैं इस प्रदेश का केन्द्र पेशावर था। इसमें भारतीय और यूनानी दोनों कला प्रभावों का अच्छा मिश्रण है। सामान्यतया इस कला ~~प्रभावों का~~ शैली का समय प्र० 50 ई० पूर्व से लेकर 300 ई० तक समझा जाता है। N. R. Ray का कहना है कि इसका निर्माण पहली सदी ईसवी पूर्व से पहली सदी ईसवी तक हुआ है। पहले ~~बुद्ध~~ बुद्ध की प्रतिमा-निर्माण करना धर्म विरोधी था। जब कभी बुद्ध की उपस्थिति दिखलाने की आवश्यकता होती तब उनके घोड़े, छत्र, सिंहासन या चरण पादुकाओं को दिखलाया जाता था। लेकिन गान्धार कला शैली ने पहले से चली आ रही ऐसी धार्मिक भावना को संतुष्ट करने के लिए ~~बुद्ध~~ बुद्ध की मूर्ति का निर्माण किया। जिसे कला प्रभाव की दृष्टि से भारतीय यूनानी बुद्ध-मूर्ति कहा जा सकता है। इस पर रोमन कला का भी प्रभाव दिखलाई पड़ता है। पॉलमेसन और स्मिथ भी मानते हैं कि यह शैली यूनानी अधिक और भारतीय कम है। डॉ० वी० ए० स्मिथ बताते हैं कि गान्धार कला की शैली यूनानी-रोमन है। परन्तु डॉ० एच० गोयल लिखते हैं — "सौन्दर्यबोध व्यवहार में कला यूनानी रोमन ~~कला~~ कला से तनिक भी नहीं मिलते हैं। इस कला शैली को कुषाण नरेशों ने काफी प्रोत्साहित किया क्योंकि उनलोगों ने अपने कई कारणों से बुद्ध की मूर्ति को अपने सिक्कों पर भी अंकित करवाया था।

गान्धार कला शैली में निर्मित बुद्ध मूर्तियाँ स्लेटी पत्थर से बनी हैं बाद में धीरे-धीरे इसमें लाइमप्लास्टर, स्टूको तथा धातु का भी प्रयोग प्रारम्भ हुआ। इन मूर्तियों का विषय भारतीय तथा शैली यूनानी है इसलिए कुछ लोग इसे इण्डो-ग्रीक बौद्ध कला भी कहते हैं। इस कला शैली

में बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित घटनाओं को अभिव्यक्त किया गया है। उसमें जन्म सम्बन्धित धर्म चक्र परिवर्तन महापरिनिर्वाण आदि से जुड़ी हुई अनेक प्रतिमाएं हैं। इसमें बुद्ध को अति मानव के रूप में चित्रित करने की कोशिश की गयी है। इस कला शैली के बुद्ध में स्वाभाविक सौन्दर्यता तो है ही साथ ही ज्योतिर्मय सौन्दर्य तथा ईश्वरीय गुणों का रहस्यमय गठबंधन दिखलाया गया है। Para change बुद्ध मूर्तियों के शारीरिक अंग इस तरह चित्रित हुए हैं कि शरीर के आध्यात्मिक और दैवी प्रभाव को सहज ही ग्रहण किया जा सके बुद्ध की मुद्राओं में ध्यान मुद्रा और अभय मुद्रा का काफी महत्व है। जिनका आकार प्रकार यूनानी देवता अपोलो से साम्य रखता है। बुद्ध के शरीर पर चित्रित वस्त्र और आकर्षक विदेशी प्रतीत होते हैं। इन मूर्तियों में पारदर्शक वस्त्रों का नहीं बल्कि मोटे वस्त्रों का चित्रण हुआ है। मूर्तियाँ प्रायः अधिक मांसल हैं, ओठ मोटे हैं तथा आँखें धंसी तक खींची हुई हैं। इसमें बुद्ध के सिर पर मुकुट भी है। बुद्ध को कभी-कभी सिंहासन पर दिखाया गया है और चप्पल का भी प्रयोग काफी हुआ है। मूर्तियों के मुख मंडल के चारों ओर प्रभा मंडल है। साधारण की धारणा है कि यूनानी कलाकारों ने अपनी परम्परा के अनुसार शारीरिक सौंदर्य एवं भौतिकता पर अधिक बल दिया है और उनकी अभिव्यक्ति में आध्यात्मिक और भावुकता का अभाव है।

प्रायः गान्धार कला शैली में निर्मित मूर्तियों के सिर केशयुक्त हैं या अलंकृत हैं इनके निर्माता कलाकारों को यह ध्यान नहीं रहा कि सन्यास ग्रहण करते समय उन्होंने सिर मुंडन किया था गान्धार कला शैली की बुद्ध मूर्ति की धर्मचक्र मुद्रा में सा तो बहुत अधिक कठोरता आ गयी है साथ ही अभय मुद्रा, ध्यान मुद्रा पद्मासन में स्थित बुद्ध मूर्ति की

की पूरी खुली आँखों को देखकर तो B.P. Sinha का कहना है कि पद्मासन में बैठने के कारण आँखों में उत्पन्न आध्यात्मिक सुख और संतोष का प्रभाव बुद्ध मूर्ति में कदापि परिलक्षित नहीं होता। बुद्ध के शरीर के अंग प्रायः वस्त्रों के आडम्बर पर आलोचना करते हुए S.K. सरस्वती ने कहा है कि गांधार बुद्ध-मूर्ति में न तो व्यक्तित्व की सच्चाई है और न भावनाओं की अभिव्यक्ति है। बल्कि उसमें मशीन की निष्प्राणता का बोध है। [जो भी हो फाउचर, स्मिथ और मार्शल ने बुद्ध मूर्ति की कल्पना का प्रथम श्रेय गांधार कला शैली को ही प्रदान किया लेकिन उन लोगों ने तो बुद्ध मूर्ति की पूर्व मूर्ति की पूर्व कल्पना की चीन उस पर [illegible] हुए राम प्रसाद चन्दा, आनन्द कुमार स्वामी, डॉ. [illegible] जायसवाल आदि विद्वानों ने विवाद प्रस्तुत किया है। लेकिन वास्तविकता तो यह लगती है कि कलाकारों के समक्ष भारतीय जातक बुद्ध की मूर्ति निर्माण का उद्देश्य था जिस उद्देश्य की पूर्ति उन लोगों ने यथा शक्ति पूरा की लेकिन [illegible] बुद्ध मूर्ति न थी। अतः उन लोगों ने केवल आध्यात्मिक अभिव्यक्ति के लिए शरीर सौन्दर्य को प्रदर्शित करने की दृष्टि से उन्नत शोभाशाली शरीर को ही निर्मित किया।]

गांधार कला शैली में उत्तर पश्चिम भारत के मिश्रित पोशाक के उदाहरण मिलते हैं। धोती, दुपट्टा, चादर, पगड़ी जैसे विशुद्ध पहनावे के साथ-साथ हम गांधार कला में पायजामा, अंगरखा और बूट आदि रखते हैं जो उत्तरापथ के निवासियों के खास अंग हैं उसमें यूनानी पहनावे का प्रभाव भी स्पष्ट है।

उस कला शैली में राजा और रानी सरदार साड़ियाँ जैसी लहरदार किनारों को रखती और बाँयी बाँह पर होती फुटकी डौंड़ी [illegible] चादर धारण करते थे। चादर की सिलवटों को बनाये रखने के लिए बनावटी [illegible] चादर पहने

और बाँधी रहती थी जो बहुत कलात्मक प्रतीत होते। कभी कभी धोती लटकती रहती थी तथा कभी कभी चादर पूर्ण ढँकती हुई बाँहों तक लटकती चादर ओढ़ लेती थी। बैठने में चादर को लिपटाकर गोद में कलात्मक रिजाति पैदा करती थी। कनिष्क की तो लम्बे आभूषण धारण करते थे, गांधार कला शैली में राजाओं के जूते रत्न जड़ित होते थे। कनिंघम ने राजा शुभमूर्ति के द्वारा ऐसे ही जूते पहनने का उल्लेख किया है।

कभी कभी सिर पर के जूड़े में मोती की लड़ियाँ तथा रत्नों के लगाने के प्रमाण मिलते हैं। लेकिन प्रायः जूड़े के ऊपर होने की तरह पगड़ी बाँधने की प्रथा थी। सिद्धार्थ का आरम्भी जीवन का उनकी पगड़ी हाथ में लिए दिखलाया गया है। इस तरह की पगड़ी आजकल अफगानिस्तान और पंजाब में प्रचलित है। शीर्ष पर जाकर द्वारा अपहृत गरुड़ के लिए या कुछ मूर्तियाँ सिंहमुख आदि का चित्रण करने का रिवाज था। कभी-कभी पगड़ी में तीन फुँदे होते थे। गांधार मूर्ति कला में पगड़ी कई प्रकार के थे। जैसे पंखुड़ीदार लहरीवाला पगड़ी हल्की पगड़ी जिसके दोनों ओर सिर पर अलंकृत होते हुए चौड़े रखे जाते थे। एक हल्की मोटी फेंटे वाली पगड़ी जिसके दोनों ओर लट्टू सी एक-एक मोती की लड़ी बाँधी हो जाती।

गांधार मूर्ति कला में देवताओं का धोती कुरता और चादर पहने दिखाया गया है। यही पोशाक व्यापारियों और गृहपतियों के लिए भी प्रचलित है। जाड़े में वे एक कंचुक धारण करते थे। जिसमें बायीं या दायीं तरफ पहनने के ऊपर पर बंधन होता था। [illegible] वह लोगों से प्राप्त मत ध्यान की मूर्ति एवं पुरुष बाँहों वाला कंचुक धारण किए हुए है। स्त्रियों के द्वारा सलवार पहने जाने का भी प्रमाण है। जिसे इतिहास ने ईरान, तिब्बत, काशगर, तथा तुर्किस्तान के, [illegible] ने आँगन कहा है। कंचुक के साथ ओगा धारण करने का रिवाज था तो पता है कि

कि यह राजकीय योजना का अंग रहा है।

गांधार मूर्ति कला में मूर्तियों को योगदान में काफी विभिन्नता दिखलाई देती है। जंगली जातियों की तरह दिखने वाले युवा सिपाहियों का चित्रण है जो जांघों तक की लम्बी कमरबन्द के अनुसार छुपा बनाया करते थे। उनके बाल घुंघराले पगड़ी से ढके होते थे। कुछ सिपाहियों के सिर कमरबंद तो दिखलाई देता है जो उनके सिर पर सोने होने भी निश्चित है आवश्यकता अनुसार उनके परिधान से अंगूठे वाले भाग को सिपाही पहनता चाहिए। उन मूर्तियों में अंकित कमरबन्द आगे तक हैं तथा नीचे घुटनों तक लटका है, ये कमरबन्द काफी कलात्मक भी है जिनकी कड़ियाँ मोतियों की आकार की है वे कड़ियाँ जंजीरें कमरबन्द की तरह एक दूसरे से पतली डोरियों से बंधी होती थी और आस्तीनों के किनारे मजबूती के लिए पट्टी से बंधा ~~प्रतिरूप किया जाता~~ होते थे। सिपाहियों के द्वारा औचित्य भी धारण किया जाता था। औचित्य का प्रयोग राजा सामंत एवं सरदार भी करते थे। इन से पता चलता है कि देखने से ही सभी लोगों की स्थिति का बोध हो जाता है।

गांधार मूर्ति कला में व्यापारियों की मूर्तियों है व्यापारियों ने धोती पहन रखी है खेतीहर या मजदूर भी धोती. धोती व लंगोटा धारण करते थे। ब्राह्मण और ब्रह्मचारी भी धोती धारण करते थे और कुछ उनके बांये कंधे पर जनेऊ लटकती रहती थी। उनके लम्बे बाल, जिन्हें गाँठों को और शोभा भी बांधे रहती थी।

विदेशी लोगों में टोपी पहनने का रिवाज था लोगों में शरीर ढकने का रिवाज था। कभी-कभी टोपी पर फूल लगे रहते थे। और अलंकृत भी हुआ करते थे यह टोपी समान के बीच होती थी। जिनके टोपियाँ

सिर पीछे पर लहराते थे। गुप्तकाल के आरम्भ की शैली की पहनी जाती थी। इसका किनारा मोतियों से सजा होता था। कुछ विद्वानों की धारणा है कि कुषाण काल [illegible] ऐसी [illegible] विदेशी सिपाही पहनते थे।

गांधार मूर्ति कला में नारी के परिधान के तीन प्रकार स्पष्ट हैं जैसे [illegible] समूचे शरीर को ढकने वाली साड़ी और बाहर का दुपट्टा जो कंधों को ढकता हुआ बाँहों पर गिरता था [illegible] बाँधी [illegible] की ओर कमर में खोंस ली जाती थी। [illegible] की तरह पर पहनावा था जिसके कई प्रकार थे। कुछ चुन्नट होता था कुछ कमर से कुछ नीचे तक और [illegible] को टांके के फतुही के रूप में [illegible] भी [illegible] है इसकी विशेषता है कि [illegible] को [illegible] की जाती थी। लेकिन यूनानी [illegible] तरह [illegible] को [illegible] लेता था। कंचुकी साड़ी के नीचे [illegible] इसके ऊपर पहना जाता था। नारियों के लिए तैयार किया गया कंचुक काफी चुस्त होता था जिसपर सिलवटों का उभार कम ही [illegible] होता था। गांधार मूर्ति कला [illegible] नारी मूर्तियों के अवलोकन से यह पता चलता है कि साड़ी पहनने के बहुत सारे तरीके थे। उन सारे तरीकों की अभिव्यक्ति बहुत [illegible] की गई है। यह बात बहुत महत्वपूर्ण है कि कलाकारों ने इन सारे तरीकों में [illegible] तत्वों का अनोखा तालमेल बैठाया है। दक्षिण भारतीयों की तरह [illegible] साड़ियों को पहनने की प्रथा [illegible] गांधार मूर्ति कला में [illegible] विदेशी [illegible] नारियों का [illegible] यूनानी तथा भारतीय दोनों पोशाकों का [illegible] है [illegible] पोशाक में चुन्नट [illegible] और [illegible] गुप्तकाल [illegible]

पहनती थी। इन सारी चीजों की अभि-
व्यक्ति भी बड़ा सजीव है। गांधार कला में
पैरों में पहने जाने वाले वस्त्र पतले
अपेक्षाकृत कम भारी और हल्के हैं। गांधार
कला के अन्तर्गत बने स्तूपों की प्रमुखता
उनकी ऊंचाई के लिए है। स्तूपों के ऊपर
छत्र लगाने का भी आरम्भ हो गया जो
संभवतः राज प्रासाद की भावना फूंकने के
लिए प्रारम्भ किया गया होगा।

इस तरह हम देखते हैं कि
प्राचीन भारतीय कला के इतिहास में गांधार
कला का महत्व उसकी अभिव्यक्ति शैली
सजीवता संतुलित अनुपात समता इत्यादि
के लिए है।